नाराशंसी

गजेन्द्र ठाकुरक जन्म भागलपुरमे सन् १९७१ मे भेलन्हि आ आइ काल्हि ओ दिल्लीमे रहै छथि।

नाराशंसी

गजेन्द्र ठाकुर

श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली

Narashamshi: A Maithili Thought in Verse (Geet-Prabandh by Gajendra Thakur first published in 2012 by M/s Shruti Publications, India

Price: Rs.100

पहिल संस्करण : 2012

ISBN : 978-93-80538-58-7

श्रुति प्रकाशन :रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.-957245.4.5, 9931654742

Narashamshi: A Maithili Thought in Verse (Geet-Prabandh by Gajendra Thakur

नाराशंसी

कोड़वाह ठाढ़ टिक्करक नीचाँमे

हलमहल कऽ कूटि माटि

सिलोहक बनल मुरुत ई मनुक्ख

छोलगढ़ियाक गुलाबीपाक

ऐबेर नै जानि किएक रहल कचकुआह

आ बीतल कएक दिन, छठिहारी छठम दिन

कविक कविताक छन्दक रससँ उगडुम करैत

आ डराएल विश्वदेव जे पद्यक रस जे झझाएत तँ

पसरि जाएत सगर विश्वमे गायत्री नाराशंसीक संग

से ओ

कविक कविताकेँ छन्दक रसमे राखि दैत छथि

बलि दऽ दैत छथि

कविक कविताक छन्दक रसक बलि

आ गबैत छथि नाराशंसी।

आ आकांक्षाक अग्नि

पृथ्वीसँ द्युलोक दिस जाइत

माता पृथ्वीक हृदएक आगि

द्यौ पिताश्री पृथ्वीक पुत्र वा भाए

आलोकदीप्त ई नीलवर्णक आकास

अरणिमन्थनसँ प्रकाशित ई पृथ्वी

कर्कश बजरी सूगाक स्वर

ओतए धारक पलार लग

आ दूटा धारक हहाइत मोनियारक

भँसिआएल खेबाह कहुना निकलि गेल मुदा

आगाँ बढ़िते जक, बढ़ब आकि धँसब

झाँखीक झझिया करत सुरक्षित हमर गाम

दाह-बोह आएल, किएक ई

एकार्णवा, दह, जलामय, कनबहकेँ झाँपि

खेधा-पौटी नाहक माङीपर बैसि

खसबैत बसेर जाल आ हम दोसर माङीपर बैसि खेबैत छी

ओहि जालकेँ, दिशा निर्दिष्ट भऽ

कन्हेर करैत

जालक चारूकात ठकठकिया करैत

अनैत माँछकेँ जाल दिस

टुस्सा, सारिलबला काठक तँ गाछी विलुप्त

बबुरबन्ना बनल ओइ पारक खेत, कमलाक रेत

बदहा पहिरने लोक, आ ई गाछ बृच्छ

ठाढ़ मुदा हरियरी, जेना दुःखी पीड़ित

टुस्साक निकलब, जेना आगमन कोनो अभागक

चारू कात पसरल कमलाक रेत, आ ताहि बीच टुस्सा निकलब

मुदा संकेत प्रायः कोनो आसक।

आ तखने ध्वनि

मधुर स्वर बला करार सूगाक

कंठ लग लाल दागी बला अमृत भेला सूगाक

स्वर अबैत बनि नाराशंसी।

गायत्री बनि गेल चिड़ै आ बिदा भेल गन्धर्व लोक

अनबा लेल सोमरस

ओइ रसमे उगडुम करत हमर कविता

नै बुझल अछि व्याकरण छन्द

त्रयोदशीकेँ व्याघ्र केलक हत्या पाणिनिक

त्रयोदशीकेँ के देलक शिक्षा हमरा?

जखन व्याकरणाचार्य बन्न केने छथि,

बन्न अछि त्रयोदशी तिथिकेँ व्याकरणक पठन-पाठन

व्याकरणाचार्य नै पढ़ैत छथि, नै पढ़बैत छथि ओइ दिन व्याकरण

आ त्रयोदशी तिथिकेँ अबैत छल गायत्री चिड़ै बनल

त्रयोदशीकेँ के देलक शिक्षा हमरा

चिड़ै बनल गायत्री देलक हमरा शिक्षा गबैत नाराशंसी

मड़ियाक सूक्ष्म प्रहार

बनबैत अछि सोनक काञ्चनपुरुष।

आ एतए

पुत्रक उत्पत्तिक पूर्वहि राखब ओकर नाम?

काञ्चनपुरुष!

ने कोनो सूत्र ने कोनो ठाम

आ तकर बादक सभ गप, बात-विचार

ककर के,

आ ककरासँ ककर

के अछि ओ ठाढ़ जे आएत हमर माँझ

पघरियाक प्रहारक काजो नै

सुखाएल अछि जड़ि

फेर..

फेर कमरसारिक खट-खुटक ध्वनि

सड़ेस कागचक बालु जेना आक रेत

आ हम दसौढ़ी चौकठिक आगाँ भेल छी ठाढ़

दसौढ़ी चौकठिक दोहराएब नै पसिन्न

नै पसिन्न सूक्ष्म कलाकृति

जे लेने रहैत अछि, नुकेने रहैत अछि

कएक टा रहस्य

कएक टा बात-विचार संस्कार

काञ्चनपुरुष!

आएत हमर माँझ?

त्रयोदशीकेँ के देलक शिक्षा हमरा

चिड़ै बनल गायत्री देलक हमरा शिक्षा गबैत नाराशंसी

नाराशंसी- मनुक्खक स्तुति

आन्हर केलक हाथीक वर्णन
सूढ़ छूबि बुझल एकरा सर्पाकार
पएर छूबि बूझल अछि एकरा कोनो वृक्ष
आ एकर जड़ि, धड़ि आ छीप
सभटा वर्तुल
भालसरिक ई गाछ
अछि ककर ई सड़कऽ कातमे
माटि भरलापर जे एकर जड़िमे घून धऽ लैत छै
छलै धोधरि ठाढ़िमे

नै जड़िमे, से लगैत छल कखनो हाथी
लगैत छल कोनो पनडुब्बीक झोँट
आकि केश सस्त्रबाढ़निक
आ ई सेहो आब आबि गेल सड़कपर
आब ई गामक नै अछि
भऽ गेल अछि सरकारी
छूबि कए कोना करू वर्णन एकर
भेल आन्हर
सरकारी गाछ
चिड़ै सन वेदी
सरकारी हाथी
चिड़ै बनि गायत्री मिज्झर होइत अछि द्यूलोकमे देव संग
चिड़ै अछि बैसि गेल भालसरिक गाछपर
आन्हरक हाथमे संयोगसँ आबि गेल चिड़ै
तेहने हम आन्हर
पकड़ि लेलहुँ चिड़ै
भुसना भथबाक दृश्य
दृष्टि
केबाल जेकाँ कठोर
मुदा पानि पड़लापर भथल
रीझम आ अधघैली लेने
सोबरना आकि बधना लऽ घुमैत
पनिभरनीक माथपर राखल सिरहर देखैत
पुरहर सोझाँ बैसल वर-कन्या
वरक हाथमे अबि गेल चिड़ै
कोड़वाह ठाढ़ टिक्करक नीचाँमे
सिलोहक बनल मुरुत
मनुक्ख
आन्हरकेँ देखाएब अएना
गोढ़िआरी, धारक पलार

झाँखीक झझिया करत सुरक्षित हमर गाम
दाह-बोह आएल
किएक ई
एकार्णवा
दह
जलामय
कनबहकेँ झाँपि
पनिझाओ भेल सीमित मुदा तकरा बाद
मधुर स्मृति
आन्हरकेँ देखाएब अएना
आन्हरक पाँछा चलत आन्हर सभ पतियानी बान्हि
ई नम्माधग्गी
बिड़इमे होइत मछहर
कच्छाछोप,
काही घुमैत
कौआठुट्ठी गाछक फड़
हेलैत कबइ
कबइजल्लाक
खींचि फिरचइ पकड़ि जाल खिरबैत
टापी छापब, उजाहिमे उपलाइत माँछ
सहदसँ माछक शिकार
इछाइन चारू कात
आ ओतहि खापमे माँछक अंडा
जीरा सेहो
थइरमे छबराक संग माँछ
अमच्छ डबरा, मेहनतिक अपव्यय करबैत
जोह धारक दिशाक
मुदा अबार धारकेँ मारि फेकैत
माँछ
घुट्ठी भरि पानिमे चाँछ

आ ओइपर चढ़ब धारक विरुद्ध
चालि दैत ई माँछ
खेधा-पौटी नाहक माडीपर बैसि
खसबैत बसेर जाल
आ हम दोसर माडीपर बैसि खेबैत छी
ओइ जालकेँ दिशा निर्दिष्ट भऽ
कन्हेर करैत जालक चारूकात
ठकठकिया करैत
अनैत माँछकेँ जाल दिस
पलइ आ पिठकट
बेच दऽ कीनल माँछ
लावा-दुआ, ठेडी
धोबिया चिड़ै, मछगिद्दी
औकामे गूडी सभ उठा
एलौं ऊपर
आन्हरक पाँछा चलैत आन्हर सभ
पतियानी बान्हि
अरण्यमे करब रोदन
पानि चारू कात
मखानक बीया खकस्याह
मखान उठबैत छी पेलनीसँ
गूडीसँ चोंइटा हटबैत रहैत छी
बाङक बङौरा आ सुखाएल ई बङठी
औँटि कऽ निकालि बङोर तुमब
आ फाहा पृथक हएत
धुनकीसँ धूनब
लारनिसँ ताँतिपर कऽ आघात
अरण्य-रोदन तात
अरुन्धती देखबाक लेल देखाउ कोनो दोसर तरेगण चमकैत
कारण अरुन्धती अछि मलिन

दोसरापर आँखि स्थिर कऽ फेर देखि सकब अरुन्धती
रावण किए राखलक सीताकेँ अशोक वाटिकामे?
अशोक वाटिकेमे?
टकुरी कटैत
मड़िआयब छिन्नाकेँ
पागब सूत
गफ्स कपड़ा
ननगिलाट पहिरने बूढ़ी
सोझाँ नन्हसुतमे मलकिनी
तूरसँ कड़गर मुदा पाथरसँ मोलाएम
ई ढेपा
हम महान्
मुदा हमरोसँ अछि क्यो मलिन तँ क्यो तेजोमए
कलबत्तू पइसा कऽ गाँथब आभूषण
किरमिची चानीक पानि चढ़ल
मुदा वएह ताम
साँप मारने कुण्डली
ओकर स्वभाव
हमर स्वभाव बैसल छी भऽ चुक्कीमाली
पाग नै चाही हमरा मौड़
शंकुक आकारक पैघ,
कोढ़िलायुक्त पागक अग्रभागक फेंच नै
आकाशकेँ मारब मुक्कासँ
चिरतन, ठिकरी, लहेरिया आ जंगलाती छाप
पटोर, गुलबदना, नीलाम्बरी
सोइरीक नूआ
कलफ लगा कए कड़गर कए
भेलासँ दऽ चेन्हासी
खुटिया मिरजइ ओछ

पितृक तर्पणो हएत आ आमक जड़ि सेहो पटि जाएत
तूरक फाहा, पोखरिया
लहेरिया, बदामी, चानपंखा
बेराएब आ सुइया पैसाएब
सिऐन अधलाह, गुलठिआइत तूर
अशा मोदक खा हएब तृप्त?
लखिया भेड़ जेकाँ आगाँ-आगाँ
बथनिञाक बथनाएब अबैत काल
आ खभाएब जाइत काल
बीसटा भेड़क लेहड़
एक सए भेड़क बाग
चारि-पाँच सए भेड़क गँहेड़
भेड़कँ खउरब
वाण बनबैकाल जाइत राजाकँ नै देखब!
एकाग्र!
पुरान लोहझाम
लोहङ्गरकँ
भाथीमे पैसैत वायु
भाथी सालब आ प्रज्वलित करब अग्नि
कलम छेनी
चकरसानपर पिजबैत सरौता
कबिराहाक कनसीपर उठैत धुन
छोड़ल वाणक गति कम होइत-होइत
शून्य भऽ जाइत अछि।
हमर आकांक्षाक अग्नि
पृथ्वीसँ द्युलोक दिस जाइत
माता पृथ्वीक हृदएक आगि
द्यौ पिताश्री
पृथ्वीक पुत्र वा भाए
आलोकदीप्त ई नीलवर्णक आकास

अरणिमन्थनसँ प्रकाशित ई पृथ्वी
दाँत उखाड़ि विषहीन करब सर्पकेँ
छिलुआ पहलदार बासन
आघातसँ मठारब पित्तरि
कलगैआ लोटा
निरंजनीक दीप
जलधरी
दीयठिमे राखि दीप
टुमटाम गहना
गोबरियाव सोन
जोकठी आ दसकलम
चाँपकली पहिरने ओ
हलुमानी नातीक लेल
पथरौटी पहिरि
पवित्री जनउमे बान्हल
श्राद्धक काञ्चनपुरुष
ऊँटपर लादि लक्कड़
फेर ओइमेसँ निकालि एकटा खुभड़ी
पीटब उष्ट्रकेँ
परती खेतमे पानि बरसियो कऽ की करत?

चन्दनलेपक प्रभाव
एक ठाम लगाओल मुदा
शीतल कएलक सम्पूर्ण शरीर
ऋषि माण्डव्य तपमे लीन
चोर आबि नुकाएल हुनक आश्रममे
राजाक सिपाही हुनको पकड़ि लऽ
मुदा सूलीपर चढ़ेबा काल भेद खुजल
मुदा सूलीक अणी रहि गेलन्हि हुनकर शरीर मध्य

बाँचि तँ गेलाह मुदा भेलाह अणीमाण्डव्य
अहाँक पापक भोग भोगि रहल छी हम
छत्ता तानि चलैत मारते रास लोक
बीस गोटेमे पन्द्रहक हाथमे छत्ता
मुदा सभकँ कहब हम छत्ताबला
विक्रमादित्यक पुत्रीक शिक्षक वररुचि
राजपुत्री कएलन्हि कोनो उदंडता से आनि देलन्हि मूर्ख पति
मौन धारण कएने ओ रहैत छल
राजपुत्री देलन्हि कोनो पोथी शोधन कार्य लेल दोहरएबाक लेल
बिन्दु, बिकारी आ मात्रा ओ नखछेदकसँ देलक मेटाए
अछि ई चरबाह
तिल आ चाउरक मेल
दूध पानि सन नै होइत अछि
होइत अछि ई स्पष्ट
एखनो डोमासीमे
जिबैत वर्तमानक संग भविष्यक ताकिमे
स्थिर ओइठाम ठाढ़,
भाए तँ गाम अबिते अछि
ओढ़ना पहिरना नीक मुदा काज वएह
हमरे नै फुराइए करू की?
भविष्य तँ वएह बुझाइत अछि।
जे वर्णाश्रम नै रहितैक तँ
बँसकरम करितै के?
सेप्टिक टैंक तँ गामो घरमे आबि गेल
से ओहूमे पाइ भेटैत अछि
जुनि घबड़ाउ
तराजूक एकटा पलड़ाकँ उठाएब तँ
दोसर अपने खसि पड़त
समर्पण
कऽ देलौं हम समर्पण

देखू ने
तृण मुँहमे देने ठाढ़ छी
कएलौं आत्मसमर्पण
आगि छी
घीकेँ सुड़डाह करैत
जारनिकेँ अपन सभ खद्य बौस्तुकेँ जड़बैत
अपनो भऽ गेल जेना सुड़डाह
लाठी आ लाठी लग पूआ
बच्चाक संग सूतल
बौआ उठल खाएब पूआ
लाठी लग राखल अछि पूआ
लाठीकेँ कुर्कुट कऽ रहल मूस
तखन तँ पूआ सेहो मूसे खएने हएत- उठल केने मोन हूस
ओसारपर राखल दीप कए रहल प्रकाशित घर आ बाहर
घरक दीप मात्र कए रहल प्रकाशित घरकेँ
भुस्साकेँ छोड़ि अन्नकेँ बहार करब
दू टा पथिक- रथी
रातिमे गाममे ठहरि गेलाह
मुदा आगि लागल
एक गोटेक रथ जड़ि गेल आ दोसरक घोड़ा
दुनू पथिक एकटा बाँचल घोड़ाकेँ रथमे जोड़ि
अपन यात्रा करैत रहलाह
नाकक अग्रसँ कानक अधोभागकेँ सुरकबाक निरर्थक प्रयास!
नृप हजामकेँ कहलन्हि राज्यक सभसँ सुन्दर बच्चाकेँ आनए लेल
आनलक ओ अपन पुत्र
थाल लगा कऽ धोलासँ नीक
थाल लागैए नै दियौ
पथिक एकटा पंगु आ दोसर आन्हर
पंगु बैसि आन्हरक कान्ह कऽ रहल यात्रा
पीसल आटाकेँ पीसब

मूर्खता
मोट लाठी फेंकब भुकैत कुक्कुड़ दिस,
करत शान्त दोसराकेँ सेहो
प्रधान शत्रुकेँ मेटाएब तँ छोट मोट ओहिना हँटि जाएत
कएक द्रव्यसँ मिश्रित शरबतक स्वाद फराक
कोनो एक जेकाँ नै
आमक गाछ नै दैत अछि फल मात्र
दैत अछि सुगन्धि दैत अछि छाह
अनेक राजा द्वाराशासित
दुखित आपसमे विरोधी राजाज्ञासँ
बीयासँ आँकुड़
आ फेर आँकुड़सँ बीया
कार्य-कारण प्रहेलिका
बेंगक छरपान
बीचमे छोड़ैत बहुत रास स्थान
बहुत रास संभावना
बहुत रास छूटल काज
बड़का माँछक खाएब छोट माँछकेँ
रथ बनबएबला करथु बरखा ऋतुमे अग्निक स्थापन
रथकार- व्यवसायी वा कियो जे रथ बनबैत हुअए!
से चलनिमे जे शब्द अछि से अछि बलगर।
राजाक नगरीमे प्रवेश पंक्तिबद्ध भऽ
नै तँ करत सिपाही पुष्ट पिटान
नूनक खानिमे जे जाएत से बनत लवण
लौह तिराएल जाएब चुम्मक दिस
बगुलाकेँ पकड़बा लेल उपाए
ओकरा माथपर मक्खन धऽ दियौ
आ ओ जे पघलि कऽ खसत तँ
आन्हर भऽ जाएत बगुला आ पकड़ि लिअ ओकरा
से मक्खन रखिते काल किए ने पकड़ि लेब!

बोन्मे सिंह नै रहत तँ लोक बोन खतम कऽ देत
आ बोन नै रहत तँ सिंहकेँ खतम कऽ देत
जतए धुँआ अछि ओतए आगि रहबे करत
विषकृमि विषमे जीबैए
नै तँ सामान्य तँ विषमे मरि जाइए
अपन लगाओल विषवृक्ष हुअए तँ तकरो नै काटू
नै उखाड़ू
एक दोसराकेँ ठेलैत तरंग सभ
पहुँचिए जाइत अछि तट
वृद्धकुमारि इन्द्रसँ माँगलक वर
हमर पुत्र स्वर्ण बासनमे दूध-घी-भात खाथि
माँगि लेलक वर, पुत्र, गाए, आ सुवर्ण एक्के बेर
साँप आ बिज्जीक दुश्मनी
देखिते देरी खौँझाएब एक दोसरापर
कमल दलक सए पातकेँ सुइयासँ छिद्रित करब
एक्के बेरमे मुदा छिद्रित होइत हएत एका-एकी
आगिपर प्राणोत्सर्ग करैत फतिंगा
मूर्ख सेहो
देशभक्त सेहो
आकाशमे बड़ड दूर अछि चन्द्रमा
मुदा कहै छी देखू ओइ गाछक ऊपर अछि चन्द्रमा
सेहो तँ अछिए
माथक पाछाँ हाथ आनि नाक छूब
सोझ ढंगसँ काज नै करब
सेहो तँ करिते छी
कुकुड़क पुच्छी सोझ केनाइ, से करिते छी
मुइलकेँ सुगन्धित उबटन लगाएब
सिंह जेकाँ बीच-बीचमे पाछू देखि लेब
कोनो शिकार तँ ओम्हरो नै अछि
बालुसँ तेल निकालब

सुन्द-उपसुन्द असुरकेँ नष्ट करबा लेल ब्रह्माक निर्देशपर
विश्वकर्मा बनेलन्हि तिलोत्तमा पठेलन्हि कैलासोद्यान
दुनू ओकरा प्राप्तिमे लड़ि कऽ मरि गेलाह
लोहार लग सुइया आ कड़ाही बनबाबए लेल दू गोटे गेलाह
ओ पहिने सुइया बनेलन्हि फेर कड़ाही
डोरी बान्हल पक्षी सन पराधीन
सीढ़ीपर एकाएकी चढ़ैत छतपर पहुँचब
तहिना ज्ञान सेहो क्रमशः
भात रन्हबामे सभ भातकेँ नै एकाध टा भातकेँ देखै छी जे सिद्ध भेल
दुर्योधन द्वारा भीमकेँ देल स्थावर, गाछ आ खनिजक विष
धारक साँपक जंगम विषसँ भेल कटित
खुट्टा ठोकै काल हिला कऽ ठोकल जाइत अछि
तहिना अनेक दृष्टान्त पक्षमे देब उचित
स्वामी आ सेवक
पोषक आ पोषित
पसेनासँ भीजल कीड़ायुक्त वस्त्रकेँ फेंकब
उड़ीसक डरे सुजनी नै फेकब
झील नै रहत तँ मगरमच्छ नै रहत
मगरमच्छ नै रहत तँ झील सभ धकिया लेत
शुनःशेप, बलि आकि प्राणदण्ड

आकाश मध्य लिखल हमर लेख

कागजपर लिखल क्यो पढ़त
क्यो नै
मुदा ओतए जे उठाओत आँखि देखत
अंगैठी-मोड़ करैत उठैत भुजाक स्पर्शसँ
करत अनुभव
जे विश्वक समाप्ति हएत
किछु लोक बचत

तखन करब कोन काज
कार्यालयक तँ कोनो काज बचत नै
ने कंप्युटर ने अन्तर्जाल
सुन्न चारू कात
ने लूरि खेती करबाक हमरा
कागत रंगबाक लेल रोशनाइ नै
वादक सम्बल अर्थहीन
विकराल राति सोझाँ ठाढ़
आकाश मध्य लिखल हमर लेख

वादक सम्बल अर्थहीन
विकराल राति सोझाँ ठाढ़
गरजैत मेघ रौद्र
मेघमे विद्युत
वृत्रहन्ता इन्द्र चीरैत छथि मेघ
कवष ऐलूषक ऋक्
शूद्र कवि हमर
विद्युत् प्रकाशसँ प्रकाशित मेघक शक्तिपात्
शरीरक मध्य हजारक-हजार धार
रक्तक प्रवाहक साँपसन टेढ़-मेढ़ चालि
हमर मोन दौगि रहल
ऐ अन्तर्मनक धारक बीच
ओइ बहिर्जगतक विद्युतसँ तीव्र
चतुष्पात् पुरुष वा ब्रह्म
मुदा एकपाद ई जगत्
अन्तर्मनक प्रचोदयिता
आसुरी वृत्र आ राक्षसी पणि
शारीरिक धार संचार तन्त्र
चलू समुद्र दिस हमर नाड़ीतंत्र आ एकर
लहरिमे डूमैत-उगैत

अपन भोगल यथार्थसँ बहार केलौं मधु
आहुति देबा लेल ओइ समुद्रमे
आ तखने शरीरक नदी-धार
लहरिमे डुमैत करैत अछि आनन्दित
जागरित मोनसँ निकसैत वाणी
पीपड़क पातक नाड़ीतंत्र सन
इला-सरस्वती आ भारती छथि
विद्युत् बाल लेल भोजनक इन्तजाम करैत
ज्योतिक हम साधक
सन्दीपनकूट हुअए लावण्यमय
सहस्त्रशाख विद्युत् हिरण्यमयी
सहस्त्रजित् अजस्त्र अन्तर्मुखी
आ
ऋतं बृहत्
ऐ बँसकरमक विश्वकर्मा
भीखूक फारब आ
ओदारि कऽ निकालब
उजरा औषधि वंशलोचन
कोनिञा सूप हकरा पथिया
मुदा खजुरिया बान्हमे बान्हल
हमर आ ओकर वर्तमान आ भविष्य
वरेण्यम् छन्द पूर्त्यर्थ
वरेणियम्
स्वः सुवः
सूवेऽग्ने सूनवे अग्ने
त्रयम्बकं यजामहे- त्रियम्बकम्
वैदिक स्वच्छन्द, मुक्त आ अपवाद प्रवृत्ति बेशी
लौकिक बेशी सुव्यवस्थित आ नियमित
विष्णु वृहत् शरीरी युवा कुमारक तीन पगमे विश्व नापब
विष्णु आख्यान

विष्णु यज्ञक चारू दिस
पूब अग्नि
दक्षिण गायत्री
पच्छिम त्रिष्टुप्
उत्तर जगती
तीन आंगुर नीचाँ औषधिक जड़िमे
सहस्त्रात् यूपात्
हजारक हजार प्राप्त-अप्राप्त बंधनसँ मुक्ति
शुनः शेपक मृत्युदण्ड वा बलि।

इक्षवाकु वंशक वेधस राजाक पुत्र हरिश्चन्द्रक सए पत्नी
घरमे पर्वत आ नारद दूटा ऋषि रहैत छलन्हि
नारदक निर्देशपर वरुणसँ कहलन्हि- सन्तान दिअ,
जइसँ हम अहाँक यज्ञ कऽ सकी
रोहित नाम्ना पुत्र
वरुणसँ पशुक १० दिन फेर दाँत हेबा धरि,
फेर दुद्धा दाँत खसबा धरि
फेर नव दाँत हेबा धरि
फेर ओकर शस्त्रधारी होएबा धरि।
तखन रोहितकेँ कहलन्हि।
मुदा ओ तीर-धनुष लऽ बोन दिश चलि गेलाह,
मना कऽ देलन्हि।
आ तकर एक बरख बाद वरुण हरिश्चन्द्रकेँ पकड़ि लेलन्हि
आ फूलि गेलन्हि पेट हरिश्चन्द्रक
घुरल इन्द्र पुरुषक रूपमे कहल
जे मनुष्यक बीचमे रहैए नीक सेहो अधलाह भऽ जाइए
विचर एक साल
विचरलासँ पएर फूलयुक्त
आत्मासँ फल होइए आ ओ ओकरा काटैए
एक साल

ठाढ़क भाग्य ठाढ़
बैसलक बैसल
आ सूतलक सूतल
से विचर एक साल
कलि सूतल-पड़ल
द्वापर उड़ैत
आ त्रेता ठाढ़
से तोँ सत्य जेकाँ विचर एक साल
सूर्य विचरैत नै थाकैए
तोरा मधु आ उदुम्बरक मिठगर फल भेटतौ
विचर एक साल
सुयवश ऋषिक पुत्र अजीगर्तक परिवार
भूखल पत्नी
तीन पुत्र शुनःपुच्छ, शुनःशेप, शुनोलांगूल
बापक प्रिय शुनः पुच्छ आ माएक प्रिय शुनोलांगूल
से सए गाए दऽ
शुनःशेपकेँ कीनल
राजसूय यज्ञ
होता विश्वामित्र
अध्वर्यु जमदग्नि
उद्गाता अयास्य
आ ब्रह्मा वशिष्ठ
से बलि बान्हत के
एक सए गाए आर माँगलक अजीगर्त
अग्निक आवाहन आ परिक्रमा
आब वध के करत
एक सए गाए आर दिअ
पिजबैत तरुआरि
शुनःशेप
प्रजापतिक आवाहन

जो अग्नि लग
अग्निक आवाहन
जो सविता लग
जो वरुण लग
जो फेर अग्नि लग
जो जो विश्वदेव लग
विश्वदेवक आवाहन
जो इन्द्र लग
इन्द्रदेवक आवाहन
जो आश्विनौ लग
अश्विनक आवाहन
जो उषा लग
उषाक आवाहन
मंत्र पढ़ैत-पढ़ैत बन्धन खुजैत गेल
इक्ष्वाकुक पेट ठीक भऽ गेल
फेर ओ ऋत्विज् भऽ यज्ञमे सम्मिलित भेल
विशेष विधि
"अंज सव" विधिसँ निकाललक सोमरस
आ राखलक ओकरा द्रोणकलशमे
फेर स्वाहा
फेर अन्तिम कृत्य
फेर ओ विश्वामित्रक कोरामे बैसि गेल
अजीगीर्त दिअ हमर पुत्र
विश्वामित्र नै ई अछि आब देवरात विश्वामित्र
अजीगीर्त पुत्रक आह्वान
आउ
शुनःशेप- तीन सए गाए हमरासँ पैघ?
विश्वामित्र हे पुत्र मधुच्छन्दा
ऋषभ,
रेणु

अष्टक
शुनःशेप भेल अहाँक ज्येष्ठ
मधुच्छन्दाक पचासटा पैघ भाएकेँ ई नै पड़लन्हि पसिन्न
विश्वामित्र ओकरा सभकेँ देलन्हि त्यागि
पुरुषक दान
विक्रय
त्याग

दासीपुत्रकेँ सोमसँ कएलन्हि वञ्चित तँ गेलाह ओ बोनमे
आ अपोनपप् सूक्तक द्रष्टा बनि घुरलाह
अपोनप्त्र देवताबला सूक्त कवि ऐलूषक
शुनःशेप आजीगर्तिक ऋचाक द्रष्टा सुवचक छथि पुत्र
आजीगीर्त भेल दुर्भिक्ष
जमदग्नि अछि आँखि
अङ्गिरा प्राण
कण्व मेधावी
भारद्वाज मोन छथि भरण-पोषण करएबला
विश्वामित्र छथि सर्वमित्र छथि कान
नामानेदिष्ठ- गुरुकुलमे पढ़ए लेल गेलाह
तँ भाए सभ सभटा सम्पति लेलन्हि बाँटि
फेर भेलाह मन्त्रक द्रष्टा
प्रवचन
आ दक्षिणा
अतीन्द्रियार्थद्रष्टा मंत्रक स्वरूपक अर्थक द्रष्टा ऋषि
च्यवन सुकन्या
च्यवनकेँ छोड़ि अङ्गिरावंशी स्वर्ग गेलाह
मनुवंशी शर्यातक कुमार लोकनि
दधीचपुत्रपर फेकल ढेपा
च्यवन क्रोधित भेलाह
भाइ-भाइमे युद्ध भेल प्रारम्भ

रथ जोतलन्हि सुकन्याकैँ बैसेलन्हि आ चललाह शर्यात विवाह कराओल च्यवनक संग

आश्विनौ

प्रेमक स्वीकृति लेल सुकन्याक आह्वान

पिता हमरा जकरा संगे ब्याहलनि

सुकन्या की कहलक ओ च्यवन

कहबै तूँ अपूर्ण! पूछत कोना

तँ कहबै पहिने पतिकैँ युवा कर

पोखरिसँ बाहर आबि युवा

कुरुक्षेत्रक देवयज्ञमे तोँ बाहर तँ अपूर्ण

आश्विन यज्ञमे गेलाह आ

ओतए हुनकर यज्ञमे प्रवेश भेल

आश्विन

सूर्याक रथमे बैसब

वंदन ऋषिकैँ इनारसँ निकालब

रेभ ऋषि ९ दिन १० राति इनारमे

निकालब

आ तुग्रपुत्र भुज्युकैँ समुद्रपार कराएब

इन्द्र दधीची

दधीची द्वारा आश्विनौकैँ मधुविद्याक उपदेश

इन्द्रकैँ नै

अश्वशिरसँ अश्विनौकैँ उपदेश

ओकर काटब

अश्वशिरसँ इन्द्र द्वारा प्राप्त गुह्य प्रवर्ग्य विद्याक उपदेश

अथर्वा पुत्र दध्यङ तेजस्वी

असुर धराशायी- स्वर्ग

इन्द्र कमजोर

मुदा हुनकर अवशिष्ट

कुरुक्षेत्र लग पोखरिसँ शर्यणवत्, अश्वशिर

८१० असुरक ऐ अश्वशिरसँ मारलक

पुरुरवा उर्वशी
उर्वशी- आगू चलएवाली उषा जेकाँ हम छोड़लौं अहाँकेँ
अहाँक पुत्रकेँ हम अहाँ लग पठा देब
इलापुत्र पुरुरवा
अंतरिक्षकेँ पूर्ण करएवाली आ जल बनबैवाली उर्वशी
गन्धर्वक पत्नी अप्सरा
अप्सरा- मेघ विद्युत् आ तरेगण
पुरुरवा सूर्य
अप्सरा विद्युत्
पुरुरवा पत्नी अप्सरा
घुरि गेलि देव लग
माँगलन्हि पुरुरवा देवसँ अपन पत्नी
देलन्हि ''आयु'' पुत्र पुरुरवाकेँ
वृक्षशाखासँ अरणि निर्माण
मथल- भेलीह अग्नि उत्पन्न
सरमा-पणि
पणि, वृत्र बल द्वारा गाए चोरा कऽ गोपनीय स्थानपर बन्न
सरमा इन्द्र द्वारा पठाओल गेलापर स्थानक खोज
पणिसँ सम्वाद
इन्द्रक आक्रमण
सरमाकेँ दुग्धक दान
वृत्र, बलसँ गाएक बृहस्पति द्वारा मुक्ति
सरमा- गर्जन- विद्युत् आश्रय
अगस्त्य-लोपामुद्रा
अगस्त्यक पत्नी लोपामुद्रा
प्रेमप्रलाप शिष्य द्वारा
सुनब आ पश्चाताप करब
अगस्त्य, लोपामुद्रा द्वारा ओकर आलिंगन
आ चुम्बन आ निष्पाप घोषित करब
यम-यमी

यमी यमकेँ रम्य द्वीपपर लऽ जा कऽ
कामक याचना करैत अछि
नपुंसक पति
यमक वचन
बलवान पुरुषसँ पुत्रोत्पत्तिक आह्वान
पिता विवस्वान्- आदित्य
माता सरण्यु- उषा ज्योति
इन्द्र अहल्या
देवासुर संग्राममे गौतम थाकि गेलाह
तँ इन्द्र कहलन्हि हम अहाँक रूपमे विचरण करब
गौतम स्वीकृति देल
अहल्या मैत्रेयीसँ जार
मनु मत्स्य
मनुक हाथमे माँछ
हमरा पोसू हम रक्षा करब
माछक कहब
अनुकूल नाह बनेलक
बिहारि
नाहमे बैसि गेल
जलमे अर्पणसँ आशी
ओकरासँ प्रजा
इडा यज्ञ
चन्द्र सूर्य राहु केतु
स्वर्भानु रोकि लैत अछि
सूर्य प्रकाशकेँ